।। होली के रंग ज्योतिष के संग ।।

होली से एक दिन पहले शर्माजी का परिवार एक साथ टी वी देखने बैठा । हालाकि ये एक दुर्लभ मौका था क्योंकि वो लोग एक साथ बैठकर कभी टी वी नही देखते थे । इसका कारण था कि शर्माजी की पत्नी को सास-बहु के सिरियल पसंद थे और स्वंय शर्माजी को न्युज चैनल पसंद थे । इससे टी वी के मामले में घर में साफ साफ मतभेद दिखाई देते थे । शर्माजी के दो बच्चे अपनी माँ के समर्थन में थे और वो असहाय थे क्योंकि कामवाली बाई भी न्युज चैनल की वजह से शर्माजी के खिलाफ थी ।

कामवाली बाई इसी शर्त पर घर में झाडू बर्तन का काम करने आयी थी कि उसे सास-बहू वाले सिरियल के दौरान टी वी देखने दिया जाये और कोई काम ना बोला जाये । हाँ, पगार चाहें तो दस रूपये भले ही कम देदें ।

परन्तु उस दिन अर्थात होली से एक दिन पहले सुबह से ही एक न्युज चैनल पर 'बेक्रिंग न्युज' के तौर पर संकेत दिया जा रहा था कि "होली मनाना शुभ हैं याँ अशुभ हैं" और आगे बढ़ा सा प्रश्न चिन्ह आ जाता था । चालाक टी वी वाले बताते कुछ नही थे और दिनभर 'बेक्रिंग न्युज' का वो सिलसिला चलाते रहें । दिन के बीच बीच में एक गंभीर सा मुखड़ा लिये कोई सुंदरी आ जाती और थोड़ा सा हिन्ट दे देती थी । कि होली के विषय उनके खोजी पत्रकार ने एक विशेष रिपोर्ट तैयार की हैं जिसे सुनकर और देखकर होली के विषय में उनके विचार बदल जाने वाले थे ।

शर्माजी के घर में दिनभर जिज्ञासा बनी रही और रात होने की प्रतिक्षा होती रही क्योंकि टी वी वालों ने बताया था कि रात आँठ बजे वो इस विषय में बताने वाले हैं । इस बीच उस गभीर मुखड़े वाली सुदंरी ने कई बार दर्शन दिये और इस विषय कुछ भी बताने के बजाय बस जिज्ञासा उत्पन्न करने का कार्य करती रही । बहरहाल उसने एक मेहरबानी की कि उसने इस विषय में प्रश्नोंत्तर के लिये किसी 'महाकाल गुरुजी' का नाम भी बता दिया और कहा कि रात को रिपोर्ट के प्रस्तुतिकरण के दौरान महाकाल गुरुजी भी उपस्थित रहेगें और दर्शकगण चाहे तो उनसे इस विषय में प्रश्न कर सकते थे ।

इधर शर्माजी की पत्नी ने शर्माजी को ऑफिस में फोन कर दिया कि वो आज ऑफिस के बाद कंहि ना जाये और सीधे घर आये ताकि वो उनके साथ बैठकर होली संबंधी टी वी की वो रिपोर्ट देख सके और कोई समस्या प्रकट हो तो उनसे प्रश्न वगैरह कर सके ।

जैसे तैसे रात हुई और आँठ भी बजने को आ गये । शर्माजी और उनका परिवार वेफर्स और कुरकुरों के ढेर सारे पैकेट लेकर टी वी के सामने बैठ गये । उनके बच्चे, उनकी पत्नी और स्वंय शर्माजी ने एक एक पैकेट वेफर्स और कुरकुरे का ले लिया और फिर वो लोग मशीन की तरह वेफर्स और कुरकुरे चबाने लगे । कामवाली बाई को कुछ छोटा पैकेट दे दिया गया वो भी खाने लगी परन्तु धीरे धीरे ताकि उसके एक वेफर के पैकेट के मुकाबले शर्माजी के परिवार के ढेर सारे पैकेटस का साथ चलता रहे ।

फिर अचानक टी वी स्क्रिन पर जोरदार धमाके की आवाज उभरी और जोर दार ढंग से आगे की लपटें दिखाई देने लगी । रात के आँठ बज गये थे होली की रिपोर्टिगं आरंभ हो गई थी । बम धमाके गुँजने लगे और पीछें कहि से मशीनगन की तड़तड़ाहट भी गुँजनें लगी । शर्माजी का परिवार सहमकर टीवी देखने लगा और घर में एकदम शाँती छा गई । फिर एक सुंदरी का तमतमाया चेहरा दिखाई दिया वो जोश में बोली, "क्या आप जानते हैं, होली मनाना अशुभ हैं ? होली के रंगो में ग्रहों के क्रोध की ज्वाला हैं" । फिर धमाके गुँजने लगे और मशीनगनों के चलने की आवाजे आने लगी । फिर सक्रिन पर भंयकर ढंग से लपलपाती आग की लपटों के बीच उप-शीर्षक उभरने लगे, क्या आप जानते हैं, होली मनाना अशुभ हैं ? होली के रंगो में ग्रहों के क्रोध की ज्वाला हैं । कंहि पृष्ठभूमि से वो सुंदरी जोश भरी आवाज में इन्हे पढ़ भी रही थी ।

कितनी ही देर तक से सिलसिला चलता रहा । फिर वही तमतमाये चेहरे वाली सुंदरी स्क्रिन पर प्रकट हुई और बोली, "होली के विषय में हम आपको बतायेंगे कि होली के रंग आपके लिये कितने अशुभ हैं, आज हमारे साथ ज्योतिष के जाने माने विश्व विख्यात गुरुजी 'महाकाल गुरुजी' भी हैं जो आपको इस विषय में विस्तार से बतायेगें । हम बतायेगें आपको कि होली मनाना कितना अशुभ हैं, हम बतायेगें आपको कि होली हमारे लिये कितनी नुकसान देह हैं और इसके रंगों ने हमारी जीदंगी कितनी तबाह कर दी हैं । आप जानेगें होली का सारा कच्चा चिट्ठा, मगर एक ब्रेक के बाद । ब्रेक होने से पहले 'महाकाल गुरुजी' का शर्मिदंगी भरा चेहरा भी दिखाया गया ।

फिर टी वी पर विज्ञापन चलने लगे । शर्माजी के बच्चे विज्ञापनों में दर्शायी गई चीजों को पाने के लिये मचलने लगें और शर्माजी को उनसे वो चीजें ले देने के वादे करने पड़ें । इधर वेफर्स और कुरकुरों के पैकेट पर पैकेट समाप्त होते जा रहे थे । शर्माजी ने हिसाब लगाने की कोशीश की कि कितने पैसों के वेफर्स और कुरकुरें खायें जा चुके थें परन्तु वे असफल रहे । वैसे भी आजकल उनके किराना स्टोर्स के बिल में घर के राशन से ज्यादा वेफर्स और कुरकुरों के बिल होते थे । टी वी ने वेफर्स और कुरकुरे बनाने वाली इन्डस्ट्रिज की चाँदी कर दी थी ।

करीब पन्द्रह मिनिट तक टी वी पर विज्ञापन चलते रहें और फिर अचानक रुक भी गये और स्क्रिन पर एक गुण्डे जैसे चहरे वाला आदमी प्रकट हुआ और जोर से बोला, "ठहरिये, ये आप क्या कर रहे हैं ? शर्माजी के परिवार के हाथ वेफर्स और कुरकुरे खाते खाते रुक गये और वो सहमें से टी वी स्क्रिन को देखने लगे । मगर स्वयं शर्माजी ने इसकी पर्वाह नही की और वो वेफर्स खाते रहे तभी उनकी कामवाली बाई ने उन्हे चेताया, "साहेब, ठहरने कू बोला हैं" । शर्माजी ने कामवाली की चेतावनी की पर्वाह नही की, मानों उसे जता रहे हो कि वो इस गुण्डे को बहुत अच्छे से जानते थे और ये कि वो इसी तरह डराया करता था । कामवाली बाई ने उनकी तरफ प्रशंसा भरी दृष्टि से देखा मानो उनकी हिम्मत की दाद दे रही हो ।

उधर वो गुण्डा कह रहा था, "ठहरिये, ये आप क्या कर रहे हैं ? होली मनाने से पहले सौ बार सोचियें, होली के रंगों में ग्रहों के क्रोध की ज्वाला हैं । काले रंग में शनी का प्रभाव हैं, जब आप काले रंग से होली खेलते हैं तो समझ लिजिये कि आप शनी से खेल रहे हैं । लाल रंग में मंगल का प्रभाव हैं, जब आप लाल रंग से होली खेलते हैं तो समझ लिजिये कि आप मंगल से खेल रहे हैं । पापी ग्रह मंगल और शनी आपको छोड़ने वाले नही हैं । इन्ही से होगी आपकी जींदगी तबाह" ।

इसके बाद फिर अचानक स्क्रिन पर आग की भंयकर लपटें उठने लगी और बम धमाके गुँजने लगे । ओसामा बिन लादेन को दिखाया जाने लगा और वो स्क्रिन की तरफ अपनी मशीनगन तानकर निशाना लगा रहा था । मानों होली ना मनाने की चेतावनी दे रहा हों । फिर दाउद इब्राहीम को भी दिखाया गया, वो क्रोधित मुखमुद्रा से स्क्रिन की तरफ देख रहा था । मानो वे लोग उसके शत्रु छोटा राजन के आदमी थे । फिर हेलीकॉप्टर सरपट इधर से उधर लपकते दृष्टिगोचर होने लगे, युध्द के लड़ाकू हवाई जहाज गरजते हुए बम बरसाने को तैयार उड़ते नजर आये । आंतकवादियों के काले कपड़े से ढके चेहरे दृटिगोचर होने लगे, तालीबानी लड़ाकूओं को किसी की गर्दन काटते दिखाया गया । पाकिस्तान के मुशर्रफ, जरदारी और गिलानी को भी दिखया गया । एसा लगता था कि जैसे इन सबका बुरा हाल इसलिये हुआ था कि इन लोगों ने शायद भूले से होली मना ली थी ।

फिर वही गुण्डे जैसे चेहरे वाला आदमी टी वी स्क्रिन पर प्रकट हुआ और फिर जोर जोर से बोलने लगा, "सावधान हो जाइये, इस बार होली मनाना आपके लिये आसान नही होगा" । एसा लगता था कि वो अपने चेहरे मोहरे को सार्थक करने की कोशीश में धमकी देने से बाज नही आ रहा था । वो आगे बोला, "वो बात जो हम कह रहे हैं देश के सारे ज्योतिषियों ने मान ली हैं और इसके लिये हम आपको मिलायेगें विश्व के जाने माने ज्योतिषि श्रीमान १०८, १००८ स्वामी अंनत महाकाल गुरुजी से जो आपको बतायेगें कि ये होली आपके लिये कितनी अशुभ हैं" ।

शर्माजी का परिवार पुरी कोशीश से उसका नाम याद रखने का प्रयास करता दिखा परन्तु वे सभी असफल सिध्द हुए । बच्चों ने १०८ और १००८ याद कर लिया । कामवाली

बाई ने उसे अंनत महाकाल की जगह अखंण्ड महाकाल के रुप में याद कर लिया और शर्माजी पत्नी ने उसे गुरुजी के रुप में याद कर लिया ।

इसके बाद किन्ही काले कपड़ों में और गले में ढेर सारी रुद्राक्ष मालाओं को लपेटे, हाथ में एक माला का जाप करतें हुए और शर्मिंदा होते चेहरे के साथ किसी निहायत लंपट और काइंया आदमी को स्क्रिन पर दिखाया गया । शर्माजी को वो गुण्डे जैसे चेहरे वाला आदमी और काले कपड़ो वाला, दोनो एक जैसे ही लगे । बहरहाल वो क्या कहने वाला था इस विषय में शर्माजी जानना चाहते थें सो स्क्रिन को धूरने लगे ।

दरअसल 'स्वामी अंनत महाकाल गुरुजी' नाम उस आदमी ने स्वंय ही अपना तय किया था । वो नया नया बना ज्योतिषि था और आनन-फानन नामीगिरामी बनना चाहता था । उसने मशहुर बनने के लिये सभी हथकडें अपना रखें थे । जिसमें नाम बदलना भी एक था । उसके हिसाब से किसी ज्योतिषि का डरावना और बड़ा सा नाम भी लोगों पर बड़ा असर डालता था । इस तरह बहुत दिनों की घोर माथा पच्ची के बाद उसने अपने लिये 'स्वामी अंनत महाकाल गुरुजी' नाम तय किया था ।

उसकी सोच के अनुसार नाम के साथ स्वामी लगा होना जरुरी था । इससे धर्म का ठेकेदार बन जाने में सहुलियत होती थी । वो तो स्वामी शब्द के बाद १०८ और १००८ भी जोड़ना चाहता था परन्तु लोगों ने उसे समझाया कि इससे उसका नाम बड़ा अटपटा लगने लगता था । ये बात उसने बड़ी मुश्किल से खुद को समझायी और नाम के साथ १०८ और १००८ जोड़ देने से बाज आया । परन्तु दूसरों से से अपना १०८ और १००८ वाला नाम कहलवाने से वो बाज नही आता था । इसी के चलते जब वो टी वी पर आया तो उसने टी वी वालों से अपना नाम इसी अंदाज में जनसाधारण को बताने को कहा था ।

इसके बाद उसने सोचा कि उसे ज्योतिष का अंतहीन ज्ञान था इस विषय में लोगों को थोड़ा बहुत इशारा उसके नाम से ही अवश्य मिलना चाहिये था । जिसके लिये उसने स्वामी के साथ एक नाम 'अंनत' जोड़ लिया । हालाकि वो 'ज्योतिष' शब्द का अर्थ तक नही जानता था । अखबारों में पढ़कर और टी वी पर राशियां सुनकर उन्हे रट्ट लिया करता और कुण्डली पुछने आये जातको को थोड़े बहुत उलटफेर से बता दिया करता था ।

फिर उसने स्वामी अंनत के साथ 'महाकाल' जोड़ा । महाकाल शब्द से वो ये संकेत देता था कि उसे कुछ काली विद्यायें भी आती थी और वो जादूटोना भी जानता था । इससे जब भी कोई जातक उससे कुण्डली पुछने आता था और अपने समाधान के लिये ज्यादा प्रश्न पुछने लगता था तो वो जोर से 'जय महाकाल' बोलकर उसे डरा देता और कोई उटपंटाग टोटका बता देता था । एसी ही एक परिस्थिति के दौरान उसने एक महिला जातक को बेटे के गुम हो जाने के उपाय के लिये टोटके के तौर पर सुबह उठकर 'नीला थोथा' फाँक लेने को कहा था । वो गाँव की सीधी सादी महिला थी और सुबह उठकर 'नीला थोथा' फाँक लेने वाली थी परन्तु सौभाग्यवंश उसी रात उसका बेटा उसे मिल गया और उस बेचारी की जान बच गई । अन्यथा नीला थोथा फाँक लेने के बाद उसकी आत्मा यमपुरी की ओर ही प्रस्थान करने वाली थी ।

किसी भी ज्योतिषि को 'गुरुजी' कहकर पुकारना आजकल फैशन था इसलिये उसके नाम के साथ गुरुजी लगा हुआ होना तो अति आवश्यक था । सो अपने नाम के अंत में उसने गुरुजी शब्द जोड़ लिया ।

उसका असली नाम 'अनील कुमार खत्री' था । कभी वो गाजियाबाद में जामा मस्जिद के पास कबाड़ की दुकान लगाता था और अन्नु कबाड़ी के नाम से मशहूर था । कबाड़ की खरीदारी करते करते उसके हाथ ज्योतिष की कुछ किताबे लग गई जिसे पढ़कर उसे ज्योतिषि बनना सूझा और वो किन्ही ज्योतिष के गुरुओं की तलाश करने लगा । उसने ज्योतिष के एसे एसे गुरु घटांलों से ज्योतिष की विद्या सीखी जो ज्योतिष के नाम पर पहले ही लोगों को उल्लू बनाकर ज्योतिष का कबाड़ा कर चुके थे । जिन्हौने उसे सिखाया था कि "बेटा, किसी का भी फलादेश करते समय पाँच बातों का खूब ख्याल रखों, पहली : जो भी जातक कुण्डली के विषय में पुछने आये तो उसे कुण्डली देखने के दौरान ये जरुर बताओं कि वो सबका अच्छा करता हैं परन्तु उसका कोई अच्छा नही करता । दूसरी : उसके पास पैसा आता तो था मगर उसके हाथ में टिकता नही था । तीसरी : उसने जिसका भी अच्छा किया था उसी ने उसका बुरा किया था । चौथी : कई दिनो से उसके दिमाग में एक योजना चल रही हैं जो पुर्ण होने में नही आ रही हैं । अंतिम और पाँचवी : तुम उसके लिये उपाय कर सकते हो परन्तु उसमें थोड़ा खर्च होगा ।

अपने गुरुघंटालों के इस फार्मूले को अन्नू कबाड़ी ने खूब आजमाया । कबाड़ी का काम करने की वजह से वो बातें बनाना तो बहुत अच्छे से जानता था और अपने गुरुघंटालों के पचंसूत्रीय फामूले को उसने अपनी बातों की चाशनी के साथ आने वाले जातकों के सामने खूब परोंसा और फलस्वरुप खूब धन भी कमाया । अब उसे टी वी पर आने की सूझी और उसने उन बिचौलियों को भी ढूंढ निकाला जो पैसे के दम पर उसे टी वी पर चमका सकते थे । एसेही एक बिचौलिये को उसने बीस हजार रुपये दिये और उसके जरिये वो एक मशहूर टी वी चैनल तक पहुंचा जिनको उसने टी वी पर आने के लिये पचास हजार रुपये दिये ।

एक दिन उसे टी वी चैनल के सी ई ओ ने बुलाकर टी वी पर बोलने का और चमकने का पाठ पढ़ाया । वो बोला, "देखो पंडितजी, आपके ज्योतिष की कैल्कुलेशन क्या कहती हैं, हमे नही पता । मगर हमारे टी वी चैनल की कैल्कुलेशन कहती हैं कि प्रोगाम वो दिखाओ जिससे टी आर पी बढ़े । आपको हमारे चैनल पर एसे बोलना हैं कि लोगों के होशं उड़ जायें । लोगों को हैरान कर दो, सनसनी फैला दो । विवाद पैदा करो, कुछ एसा बोलो कि लोग हमारा चैनल देखने पर मजबूर हो जायें । होली आ रही हैं, आप होली के विषय में सीध सीधे बोलेगें कि होली अच्छी हैं, होली भाईचारा हैं, होली शुभ हैं । तो लोग विश्वास नही करेगें और हमे बेवकुफ समझेगें क्योंकि ये सब तो वो अच्छे से जानते हैं । इसका उल्टा बोलिये, होली को अशुभ बोलिये और होली को तबाही बोलिये, तभी लोग हमारा चैनल भी देखेगें और सनसनाहट भी मेहसूस करेगें" ।

अन्नू कबाड़ी हैरान हो गया, वो सोचने लगा, यंहा तो उससे भी बड़े कबाड़ीये मौजूद थे । वो तो चीजों का कबाड़ खरीदता और बेचता था । मगर यंहा तो विचारों को बेचने वाले कबाड़ीये मिल रहे थे । जो लोगों को विचारों का कबाड़ बेच रहे थे । लोगों के अच्छे विचारों को कबाड़ में बदल रहे थे । वो तो पुरानी और कबाड़ हुई चीजों को खरीदता और बेचता था । मगर यंहा तो अच्छी चीजों को पहले कबाड़ में बदला जा रहा था फिर उसको उपयोग में आने वाली चीज कहकर लोगों को बेचा जा रहा था। उन्हे उल्लू बनाया जा रहा था । कमाल हो गया, वो हैरान भी हो रहा था और प्रसन्न भी हो रहा था कि उसे अपने संगी साथी मिल गये थे । उसने ठान लिया कि वो सारी दुनियां को कबाड़ में बदलकर रहेगा । वो खुश हो गया कि गाजियाबाद की उसकी कबाड़ की दुकान अब इंटरनेशनल कबाड़ी की दुकान में बदलने जा रही थी ।

बहरहाल होली से एक दिन पहले उसे तोते की तरह पढ़ाकर और रट्टा लगवाकर टी वी पर पेश किया गया । अब वो टी वी वालों का तोता बन गया था । अब वो ना कबाड़ी था और ना ही ज्योतिषि था । खुद को तोता समझकर अब वो सदा चटर-पटर बोलता दिखाई देता था । नामीगिरामी बनने की चाहत ने उसे थोड़ा बेशर्म बना दिया था । उसने लोगों को उल्लू बनाने के नये नये तरिके ढूंढने आरंभ कर दिये थे ।

उस दिन वो स्टुडियो में कैमरे से कुछ दूर बैठा प्रोग्राम के रिले होने को देख रहा था । उसे बता दिया गया था कि जब उसकी बारी आयेगी तो उसे माला जपते हुऐ कैमरे में प्रकट होना था और इसके लिये उसे वो सुंदर सी लड़की इशारा करेगी । उस इशारा करने वाली सुंदर लड़की को वो बड़ी बेशर्मी से देख रहा था और टी वी के प्रोगाम को आरंभ होता भी देख रहा था । उसने देखा पहले वो लड़की चीखचीखकर होली के विषय में बता रही थी और लोगों को होली के अशुभ होने को बता रही थी । फिर उसने देखा कि कैमरा उस गुण्डे जैसे लगने वाले आदमी की तरफ घूमा और जूम होता हुआ उसे पुरे टी वी स्क्रिन पर दर्शाने लगा । फिर जैसे चिल्लाने का दौरा उसपर पढ़ गया, जो पहले उस लड़की पर पड़ा हुआ था । दोनो चीखचीखकर होली को कोसने में लगे हुऐ थे ।

उस गुण्डे जैसे लगने वाले आदमी की चीखोचिल्लाहट जब खत्म हुई तो उसे कैमरे की जद में आने का इशारा उस लड़की ने किया । उसने झट अपने कपड़े ठीक किये और माला सी जपता हुआ और शर्मिंदा होता हुआ लड़की की बगल में ठीक उस जगह आकर बैठा जंहा वो सुदर लड़की एक मेज के पीछे बैठी थी और अब आगे उसका

इंटरव्यु लेने वाली थी । उसने अपनी तरफ से बड़ी मोहक मुस्कान से लड़की की तरफ देखने का प्रयास किया परन्तु उसकी बेशर्मी छुप नही रही थी । लड़की ने उसे कैमरे की तरफ देखने का इशारा किया और बोली, "पंडितजी, कल होली हैं, इस विषय में आप क्या कहेगें ?

अन्नू कबाड़ी ने चौंक कर कैमरे की तरफ देखा और खिसियाया सा जल्दी जल्दी बोलने लगा, "होली आप जरुर खेलें और ध्यान रखें कि रंग से खराब हुए घर के सामान को फेकें नही, उसे कबाड़ी को बेचें इससे आप अधिक नुक्सान से बच जायेगें" ।

तुरन्त ही कैमरे के पीछे से 'गलत' का आइकॉन चमकने लगा । ये संकेत था कि अन्नू कबाड़ी वो नही बोल रहा था जो उसे बोलना चाहिये था । 'लाइव' टेलिकास्ट के दौरान कैमरे का सामना करने वालों को एसे ही संकेत दिये जाते थे । ये संकेत प्रोग्राम को मॉनीटर करने वाले चैनल के दो खास लोगों को देना होता था । वो दोनो आपस में बातें कर रहे थे । "यार, ये क्या यंहा कबाड़ी की दुकान खोलने आया हैं ?

अन्नू कबाड़ी को कुछ समझ नही आया तो उसके साथ बैठी लड़की ने बात को संभालने का प्रयास किया । "पंडितजी, आप होली के विषय में बता रहे थे" ।

परन्तु अन्नू कबाड़ी तो कबाड़ी ही था । उसने अपनी बात पर फिर जोर देना चाहा और कहा, "हाँ, मैं वही बता रहा था कि होली जैसे वार-त्यौहारों पर कबाड़ बहुत निकलता हैं, जोकि बेकार नही होता हैं अगर हम उसे जान पायें तो---------" । तुरन्त ही फिर गलत का आइकॉन जलने बुझने लगा । ये संकेत था कि तुरन्त ही टॉपिक बदला जाये । प्रोग्राम को मॉनिटर करने वाले दोनो लोग झल्लाहट में बोल रहे थे, "यार, ये हमे कबाड़ी बनाकर ही छोड़ेगा" ।

अन्नू कबाड़ी के साथ बैठी लड़की ने फिर बात संभालने की कोशीश की और क्रोध को दबाने का प्रयास करते हुए दाँत पीसती हुई बोली, "पंडितजी, आप होली के विषय में कुछ बतायें" ।

"मैं, वही बता रहा हुँ" । अन्नू कबाड़ी भी ढीठता पर उतर आया । उसे आज अपने आप पर गर्व हो रहा था और उसे लग रहा था कि उसे अपनी कबाड़ी बिरादरी के विषय में अवश्य ही बोलना चाहिये । वो किसी भी हालत में कबाड़ी बिरादरी पर बोलने पर अड़ा हुआ था ।

टी वी वाले समझ गये कि अन्नू कबाड़ी अड़ियल टटटू की तरह अड़ गया था । इसलिये अब उन्हे की कोई दूसरा उपाय करना होगा । उधर सीइओ दौड़ता हुआ मॉनीटरिंग रुम में आया और जोर से चिल्लाया, "ये क्या दिखा रहे हो" ।

दोनो असहाय भाव से बोले, "सर, हम क्या करें, वो कबाड़ी हैं और अपना कबाड़ बेचने पर तुला हुआ हैं" ।

सीइओ भी असहाय भाव से बोला, "ओके, ओके, एसा करो वो फोन वाला आयडिया इम्प्लिमेंन्ट करो" ।

सुनते ही तुरन्त दोनो हरकत में आये और एक बटन दबाकर रिस्पॉन्स के लिये स्टुडियो रुम में देखने लगे । उधर अन्नू कबाड़ी के साथ बैठी लड़की ने कैमरे के पीछे चमकते टेलीफोन के आइकॉन को देख लिया और समझ गई कि अब कोई फोन आने वाला था और ये कि अब मॉनिटरिंग रुम से ही टॉपिक बदला जा रहा था । प्रत्यक्ष वो अन्नू कबाड़ी से बोली, "पंडितजी, हमारे किसी दर्शक का फोन हैं, वो आपसे कुछ पुछना चाहते हैं" ।

सुनते ही अन्नू कबाड़ी की बाछें खिल गई । वो खुश हो गया कि उसे टी वी पर देखा जा रहा था और ये कि लोग उससे कुछ पुछना चाह रहे थे । वो प्रसन्नता भरे लहजे में बोला, "जरुर, जरुर । मैं दर्शको को अवश्य ही बताउंगा । पुछें, क्या पुछना चाहते हैं" ।

लड़की ने खा जाने वाली दृष्टि से अन्नू कबाड़ी को देखा और मॉनीटरिंग रुम की तरफ अंगूठा दिखा कर क्लियरेंस का संकेत कर दिया । कैमरा क्योंकि अन्नू कबाड़ी पर टिका हुआ था । इसलिये लड़की की इस हरकत को दर्शकगण नही देख सकते थे ।

तुरन्त ही टेलीफोन की घंटी बजने जैसा स्वर सुनाई दिया और फिर फोन पर बात करने जैसी आवाज आने लगी और कोई बोला, "पंडितजी, मैं ये जानना चाहता हुं कि, काले रंग से होली खेलने पर क्या शनी भारी हो जाता हैं ?

ये फोन मानीटरिंग रुम से दोनो काम करने वालों में से एक ने किया था । इससे टॉपिक भी बदल जाने वाला था और दर्शकगण भी उत्साहित होकर फोन करना आरंभ कर देते थे । जिससे टीवी वालों को लाखों रुपये कमाने का मौका मिल जाता था । इसके लिये उनकी टेलीफोन डिपार्टमेंट से एक सन्धी हुई होती थी । एक खास नंबर टी वी वालों को उपलब्ध करवाया जाता था । जिस पर फोन करने की दर साधारण दर से अधिक होती थी । टी वी पर सेलिब्रिटी से प्रश्न करने की चाह में जनसाधारण लालायित रहता हैं और लाखों की गिनती में टी वी के खास नंबर पर फोन होतें हैं । अब लाखों लोगों के प्रश्न सलिब्रिटी तक तो नही पहुचतें हैं परन्तु लाखों फोन कॉल्स के पैसे जरुर टी वी वालों तक पहुचते हैं । अपने साधारण कॉल्स के पैसे लेकर टेलीफोन डिपार्टमेंन्ट अधिक दर से लिये बाकि पैसे टी वी वालों को उपलब्ध करवाता हैं । इस तरह जितने अधिाक फोन कॉल्स होगें उतने ही अधिक पैसे टी वी वालों को मिलेगें ।

दर्शको को उत्साहित करने के लिये और अन्नू कबाड़ी से टॉपिक बदलवाने के लिये मॉनिटरिंग रुम से किसी ने दर्शक बनकर फोन किया और पुछा कि काले रंग से होली खेलने पर क्या शनी का प्रभाव पड़ता हैं और अन्नू कबाड़ी ने उत्तर दिया कि, "किसी पर काला रंग डालना अच्छी बात नही हैं और काले रंग से किसी का काला मुँह कर देना भी अच्छी बात नही हैं । ये काम राजनितिकों को ज्यादा शोभा देता हैं इसलिये काले रंग से होली खेलना राजनितिकों को ही लाभ देगा । जनसाधारण को काले रंग से होली नही खेलनी चाहिये" ।

टी वी वालों ने देखा कि अभी दर्शको के फोन कॉल्स आना आरंभ नही हुऐ थे इसलिये उन लोगों इस बात और आगे खीचने की गरज से प्रश्न किया कि, "पंडितजी, मैं ये जानना चाहता था कि क्या काले रंग से होली खेलने पर शनी भारी हो जाता हैं ?

अन्नू कबाड़ी बहुत ही समझदारी दिखाने वालें अदांज में बोला, "देखों भाई, शनी एक पुराना ग्रह हैं और कालारंग रंग शनी का रंग हैं । जैसे कबाड़ हो गई चीजों को घर में रखने से घर भारी-भारी हो जाता हैं वैसे ही काले रंग से होली खेलने पर शनी भारी हो जाता हैं । इसलिये मैं कहता हुँ कि कबाड़ घर में ना रखो" । कबाड़ की बात फिर छेड़कर अन्नू कबाड़ी ने अपनी जात बिरादरी से अपनी वफादारी निभाने का प्रयास किया था । वंही टी वी वालों ने फिर कबाड़ की बात सुनकर अपना सिर पीट लिया । वे सब असहाय भाव से एक दूसरे को देख रहे थे ।

फिर दर्शकों के फोन आने लगे और वो किस रंग से किस ग्रह का संबंध हैं इस विषय में प्रश्न करने लगे और सभी रंगो के विषय में अन्नू कबाड़ी ने उन्हे बताया । उसने बताया कि सूर्य के नांरगी रंग जैसे लाल रंग से होली खेलने पर सूर्य क्रोधित हो जाता हैं क्योंकि ये अपने पिता की धोती उतारने जैसा काम हैं । शास्त्रों में सर्यू को पिता कहा गया हैं इसलिये उसके रंग से होली खेलने पर पिता की बेइज्जती होती हैं ।

चन्द्र के विषय में उसने बताया कि चन्द्र को शास्त्रों में माता माना गया हैं । चन्द्र का तत्व जल हैं उसका कोई रंग नही हैं । इसलिये जब आप होली के दिन एक दूसरे पर पानी फेकते हैं तो समझे कि अपनी माता को एक दूसरे पर फेंकते हैं इससे माता बीमार हो सकती हैं और आप पर मातृ ऋण हो जायेगा । जिसके लिये आपको मातृऋण की पुजा करनी पड़ेगी । मंगल के विषय में उसने बताया कि ये पुलिस वालों का और फौजियों का ग्रह हैं इसका रंग सिन्दुरी लाल हैं । इससे होली खेलने पर पुलिस और फौजी आपके पीछे पड़ जायेगें और आप कायदे कानून के पचड़े में पड़ जायेगें । उसी रात कुछ पुलिस वालों ने लाल रंग खरीदकर रख लिया और दूसरे दिन की प्रतिक्षा करने लगे उनका इरादा कुछ अपराधियों को लाल रंग के साथ रंगे हाथो पकड़ने का था । इसके लिये वे लोग जानबूझकर उन अपराधियों की जेब से अपना डाला हुआ लाल

रंग बरामद करके दिखाने वाले थे । बुध के विषय में उसने बताया कि इसका रंग हरा था और जब आप इससे होली खेलते हैं तो थोड़े चंचल हो जाते हैं और सालियों तथा पड़ौस की युवतियों को छेड़ना आरंभ कर देते हैं । इस बात को जीजाओं और जवान लड़को ने खूब याद रख लिया इसलिये कि अन्नू कबाड़ी जाये भाड़ में उन्हौने तो सालियों और पड़ौस की जवान लड़कियो को छेड़ने का खूब मन बना लिया था और रात को ही हरा रंग लेकर रख लिया ।

इसके बाद उसने गुरु के पीले रंग के विषय में बताया कि पीले रंग से होली खेलने पर आदमी का दुसरा विवाह हो जाता हैं इसलिये कि विवाह के दौरान यही पीला रंग हल्दी के रुप में लगाया जाता हैं । इस बात को अपने जीवनसाथी से तंग लोगों ने खूब याद कर लिया और दूसरे विवाह की तैयारी के लिहाज से रात को ही पीला रंग खरीद कर रख लिया ।

शुक्र के चमकीले चाँदी जैसे रंग के विषय में उसने बातया कि इस रंग से होली खेलने वालों की यौन शक्ति बढ़ जाती हैं और फिर बलात्कार की घटनाएं होने लगती हैं । इस बात को अधेड़ हो रहे लोगों ने खूब याद कर लिया और शुक्र का चमकीला रंग खरीदकर रख लिया, वे लोग इस रंग से अपनी खोयी यौन शक्ति को वापिस हासिल करने के सपने संजोने लगे थे । शुक्र के रंग विषय में सुनकर बलात्कार करने वाले अपराधियों की आँखों में भी चमक आ गई और उन्हौने तय कर लिया कि वे पुरा ड्रम ही इस रंग का खरीदकर रख लेगें और वर्षभर होली खेलते रहेगें ।

शनी के विषय में उसने पहले ही बता दिया था इसलिये सीधे राहु के नीले रंग के विषय में बताया कि इस रंग से केवल जुआरियों और सट्टेबाजों को ही होली खेलनी चाहिये क्योंकि राहु एक जुआरी ग्रह हैं और ये जुआ में जीत दिलाता हैं । तुरन्त ही जुआरियों ने इसे सुन लिया और एक दूसरे को खबर पहुंचा दी और उसी रात नीले रंग की बहुत सारी खरीददारी हो गई । कई जुआ ना खेलने वाले ने भी इसे ध्यान से सुना और उस रात से जुआ खेलने का निश्चय किया । इसके बाद केतु के मटमैले रंग के विषय में उसने बताया कि इस रंग से होली खेलने वालों को भूत प्रेत दिखने लगते हैं । ये बात भी कई चालाक लोगों ने सुनी और रंग खरीदकर अपने शत्रुओं को गिफ्ट करना आरंभ कर दिया ।

बहरराल उस रात बाजार में रगों की खरीददारी बहुत हुई । लोग समझ नही पा रहे थे कि अन्नू कबाड़ी तो रंग खेलने को मना कर रहा था परन्तु फिर भी रंग खूब बिक रहे थे । इधर टी वी पर अन्नू कबाड़ी का इटंरव्यु कर रही लड़की अन्नू कबाड़ी से पुछ रही थी, "पंडितजी ये बताये कि क्या होली के दिन रंग खेलने का कोई मुर्हुत भी हैं ।"

अन्नू कबाड़ी सुनकर तुरन्त ही जोर देकर बोला, "हाँ, ये बात पुछकर तुमने बहुत समझदारी का परिचय दिया हैं, मुर्हुत के बिगैर कोई भी काम एसा हैं जैसे अच्छे पैसे देकर बाजार से कबाड़ खरीददर लाना" । इसके पहले कि वो कबाड़ पर और अधिक बोलता लड़की ने तुरन्त उससे पुछा, "तो बताये कि होली खेलने के लिये किस समय अच्छा मुर्हुत हैं ?

अन्नू कबाड़ी बहुत समझदार दिखाई देने का प्रयत्न करता हुआ बोला, "देखो भाई, आप जो भी काम करते हो उसकी गवाही सूर्य होता हैं, जब आप रगों से होली खेलोगे तो इसकी गवाही भी सुर्य सब ग्रहो को दे देगा और ग्रह आप पर क्रोधित हो जायेगें । मैंने बहुत मेहनत से और शास्त्र अध्यन करके ये मुहुर्त निकाला हैं कि होली, सूर्यास्त के बाद खेली जाये । देखें, इस समय में सूर्य तो होगा नही और गवाही भी नही देगा, तो ग्रह आप पर क्रोधित भी नही होगें । इसके अलावा सभी ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये आप होली दहन का कार्य दिन में करें । क्योंकि ये एक बहुत ही शुभ कार्य हैं और दिन में करने से सूर्य इसकी गवाही सब ग्रहों को देगा और ग्रह आप पर प्रसन्न हो जायेगें । इसके बाद आप सूर्यास्त के समय रंगो से होली खेल सकते हैं ।"

फिर तो जैसे हंगामा मच गया, लोग हैरान थे कि होली दिन में जलाये और रंग रात में खेले । ये कैसा मुर्हुत था । इस टी वी चैनल के विरोधी चैनल ने इस मुहुर्त की खूब आलोचना की और अपनी तरफ से होली खेलने का देर रात के मुर्हुत का प्रस्ताव रखा तथा इसके लिये उन लोगों ने एक दूसरा ज्योतिषि पेश किया । इधर शर्माजी और उनके परिवार में भी वाद विवाद छिड़ गया । शर्माजी की कामवाली बाई का कहना था कि मुर्हत के बिगैर होली मनाना उचित नही था । वो बोली, "मैं तो मुर्हुत के हिसाब से ही होली मनायेगी" । जबकि उनकी पत्नी उलझन में थी कि कैसे करें । अब तक उन लोगों ने कभी दिन में होली नही जलायी थी और रात में रंग नही खेले थे । उस रात शर्माजी ने नींद का बहाना कर लिया और जल्दी से बिस्तर में दुबक गये अन्यथा अन्नू कबाड़ी की जगह उनकी पत्नी अब उनसे इंटरव्यु ले सकती थी । शर्माजी के दोनो बच्चों को कुछ समझ नही आया । अपने माँ-बाप के सो जाने के बाद वे दोनो चुपके से उठे और बाथरुम में जाकर रंग की कई बाल्टियां तैयार कर ली उनका इरादा सुबह रंग से अपने माँ-बाप को भिगो देने का था । इन बच्चों को अपने इरादों से हटाना, अन्नू कबाड़ी तो क्या उसके बाप का भी दम नही था ।